राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 65
महाकाल
सुपर कमांडो ध्रुव
रोमांचक विशेषांक

टकराव! यह छोटा सा शब्द अपने अन्दर कितना विध्वंस समेटे हुए है, इसको बहुत कम लोग समझ पाते हैं-
जब बादल टकराते हैं तो चमकती है बिजली! और जब ये बिजली ज़मीन से टकराती है तो राख के ढेर में बदल जाते हैं विशालकाय वृक्ष! जब पृथ्वी के अन्दर की चट्टानें आपस में टकराती हैं तो आ जाता है भूकम्प! कांप उठती है ज़मीन! लेकिन जब ज़मीन पर दो महाशक्तियां टकराती हैं तब उसका परिणाम और भी विध्वंसकारी हो सकता है। टुकड़ों टुकड़ों में टूट कर ब्रह्माण्ड में बिखर सकती है हमारी पृथ्वी-
तू अपनी मानसिक शक्तियों का चाहे जितना विनाशकारी वार कर ले, महामानव! लेकिन किरीगी अपनी यौगिक शक्तियों की मदद से तुझे कभी सफल नहीं होने देगा!
NUCLEAR MISSILE
महामानव अब वह पुराना वाला महामानव नहीं रह गया है, जिसको इस तुच्छ से लड़के ने मात दे दी थी।...
...अब मेरी शक्तियां और प्रभावकारी हो गई हैं। अब तू मुझे मानवों का विनाश करने से नहीं रोक सकता! क्योंकि आज इन मानवों का काल महामानव बनकर आया है...
महाकाल
कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख एवं रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

राजनगर हर लिहाज़ से एक मेट्रोपोलिस है। एक महानगर। बढ़ते हुए ट्रैफिक और जगह-जगह लगते जाम इस बात की गवाही देते हुए लगते हैं-
लेकिन आज से राजनगर वासियों को ट्रैफिक की इस मुसीबत से थोड़ी सी राहत ज़रूर मिलने वाली है। क्योंकि आज से राजनगर में चलने वाली है, ज़मीन के नीचे चलने वाली भूमिगत मेट्रो ट्रेन। और मेट्रो रेल के इस उद्घाटन के अवसर पर मुख्य प्लेटफॉर्म पर जमा है, राजनगर के लगभग सभी जाने-माने लोग -
सुपर कमांडो ध्रुव भी-
ENQUI
ESCALAT
आप इस मेट्रो पर चढ़ने वाले पहले व्यक्ति होंगे, मेयर साहब!
आइए, ट्रेन पर चढ़कर इसका उद्घाटन कीजिए।
मुझे यहां पर कोई खास काम तो नहीं है...
...लेकिन जहां पर इतने सारे गणमान्य व्यक्ति एक साथ जमा हैं, वहां पर किसी भी अनहोनी होने का खतरा अपने-आप ही बढ़ जाता है।...
...वैसे भी मुझे किसी खतरे का आभास हो रहा है।
ALATOR
ध्रुव का आभास गलत नहीं था क्योंकि इसी वक्त प्लेटफॉर्म के दूसरे छोर पर-
सुनो, कैमरा अब नेताजी पर ज़्यादा फोकस करना। मेयर पर नहीं। ऊपर से आदेश आया है। इसका सीधा प्रसारण हो रहा है!
मैं जानता हूं। तभी तो इतनी देर से मैं ट्रेन और मेयर को कम, नेताजी को ज़्यादा ढूंढ रहा हूं।
शाबाश! तुझे इसका इनाम भी मिलेगा...
...फोकट में काम नहीं करना है!...

... नेताजी से कहकर तुमको कहीं पर एक फ्लैट सस्ते में एलॉट करवा देंगे।
अरे! अरे! ये तो बेहोश हो रहा है! इतनी सी खुशी भी बर्दाश्त नहीं कर पाया।
अब मुसीबत तो यह है कि नेताजी पर कैमरा कौन ... फिक्स... अरे... अरे... आह!
बात पूरी होने से पहले ही नेताजी का पी.ए. भी जमीन सूंघ चुका था-
और उसके तुरन्त बाद- आसपास खड़े सभी लोग पके आमों की तरह जमीन पर गिरने लगे-
यह महक कैसी है?
किसी सेंट की महक लगती है। हीही- हीही।
आहे!
प्लेटफॉर्म पर बेहोश करने वाली गैस फैल रही है।
आवाज की गूंज खत्म होने से पहले ही प्लेटफॉर्म पर भगदड़ मच गई-
कुछ भाग पाए। कुछ वहीं पर गिर पड़े। और अधिकतर के शरीरों को भागते हुए लोगों के जूते रौंदने लगे-
मुझे इसी का डर था। यह भूमिगत रेल-टैक चारों तरफ से बन्द है। और यहां के वातावरण को एयर कंडीशनिंग द्वारा साफ एवं स्वच्छ रखा जाता है।

और ये साफ जाहिर है कि किसी ने एयर कंडीशनिंग प्लांट के अंदर प्लेटफॉर्म पर कोई खतरनाक नर्व गैस फैलाई है।...
...प्लेटफॉर्म के उस छोर पर लोग सबसे पहले बेहोश होने शुरू हुए थे। गैस जरूर उसी कोने के 'एयर कंडीशनिंग डक्ट' से आई है। और अगर ऐसा है तो गैस फैलाने वाले उसी डक्ट के आस-पास होंगे।
इन अपराधियों तक तुरन्त पहुंचने का एक ही तरीका है। मुझे इसी डक्ट से ऊपर तक जाना होगा...
...और इस डक्ट में खतरनाक नर्व गैस भी हुई है।...
तड़ाक
गैस से भरी, संकरी डक्ट में रेंगता हुआ ध्रुव सतह के उस स्थान की तरफ बढ़ रहा था—
...अब देखना यह है कि मैं कितनी देर तक सांस रोक सकता हूं। क्योंकि इस नर्व गैस की हल्की सी महक भी मुझे पलभर में बेहोशी की दुनिया में पहुंचा देगी।
जहां से अपराधी भागने की फिराक में था—
नर्व गैस की टेस्टिंग कामयाब रही अकमद! लोग बेहोश होने में दो सेकंड से ज्यादा समय नहीं ले रहे हैं...
यानी हमारा इस मेट्रोरेल की दीवार तोड़कर यहां की डक्ट में नर्व गैस डालने तक की मेहनत करना बेकार नहीं गया...
...लेकिन अब यहां से निकल लो। कहीं कोई आ गया तो मुसीबत हो जाएगी।

अब पाइप लपेटने वाली मोटर चलाओ, और फिर यहां से तुरन्त फूट लो!
गैस सिलेंडर भी गाड़ी में डाल लो!
मैंने तो सोच लिया है कि इस गैस का इस्तेमाल किया जा सकता है।
अब यहां से निकल लो,
हमारा मिशन तो पूरा हो गया।
ओफ! अब तो सांस रोकनी असंभव लग रही है। फेफड़े फटे जा रहे हैं! ...
...मुझे जल्दी से ऊपर पहुंचना होगा।
और यह काम इस पाइप को पकड़कर आराम से किया जा सकता है।
तुम्हारा मिशन तो खत्म हो गया, लेकिन मेरा मिशन अभी-अभी शुरू हुआ है।
और इसे पूरा करने के लिए मुझे तुम लोगों की जरूरत पड़ेगी!
स... यह तो सुपर कमांडो ध्रुव है। यह मुसीबत कहां से आ गई?
भून डालो इसे!
वैसे तो किसी को भी बेहोश करने के लिए मैं घूंसों का इस्तेमाल ज्यादा पसन्द करता हूं...
...लेकिन इस वक्त तुम्हारी ही नर्व गैस का इस्तेमाल करना ज्यादा असरदायक होगा। इस पाइप में अभी भी थोड़ी सी नर्व गैस बची हुई है।
आऽऽऽह!

मुछैया तो बेहोश हो गया। बगैर गोली चलाए।
गाड़ी भगाओ मुछैया। अगर कहीं हम इसके हत्थे चढ़ गए तो कहीं बच नहीं पाएंगे।
ओफ! वो आतंकवादी भग रहे हैं! ...
... मैं गाड़ी को दौड़कर पकड़ नहीं सकता!
अब मुझे गाड़ी को ही रुकवाना होगा।
बां ऽऽऽ
ध्रुव के गले से एक रंभाहट निकली-
और सड़क के किनारे आराम कर रहा आलसी सांड हरकत में आ गया-
बगल से लगी जोरदार टक्कर ने गाड़ी का सन्तुलन बिगाड़ दिया-
धड़ाम
और गाड़ी, बिजली के पोल से जा टकराई-
कड़ड़ड़ड़ड़
अब मुझे इनको पकड़ने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए।
ध्रुव वेन की तरफ लपका-

लेकिन अगले ही पल उसे ज़मीन पर गिर जाना पड़ा-
बूम
अरे! रॉकेट! ये मुझ पर रॉकेट से हमला कर रहे हैं। यानी इनके पास रॉकेट लांचर है।
ये कोई मामूली आतंकवादी नहीं लगते। ज़रूर इनका संबंध किसी अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी संगठन से है।
हम इस रॉकेट लांचर का इस्तेमाल अब तक इसलिए नहीं कर रहे थे, क्योंकि इसका प्रयोग करना, पुलिस फोर्स को दावत देने के बराबर है।...
...लेकिन अब हम तुझे खत्म करके ही जाएंगे।
ओह! गोलियों से तो बचना मुझे ज़्यादा मुश्किल नहीं लगता है। लेकिन 'रॉकेट लांचर' से बच पाना असंभव सी बात है...
...अगर रॉकेट के सीधे वार से बच भी गया तो धमाके से बच पाना असंभव है...
...खैर, जब तक सांस, तब तक आस...
...कोशिश तो करनी ही है...
जल्दी कर अहमद! इससे पहले कि पुलिस यहां पर आ जाए, इस छोकरे का काम तमाम करके फूट ले।
दबा ट्रिगर!
लेकिन ट्रिगर पर दबी उंगली...
...दबी रह गई-

यह 'आग्नेय बुत' और 'शीत किरणें' तो एक ही आदमी का काम हो सकते हैं। और उसका नाम है---
--धनंजय!
तुम यहां पर क्या कर रहे हो?
तुमको ढूंढ रहा हूं। और वह भी पिछले तीन दिनों से लगातार!
तुम आखिर थे कहां पर? राजनगर में तो नहीं थे!
हां! मैं राजनगर से बाहर था। मंगल ग्रह जाने की तैयारी कर रहा था। ★
मंगल ग्रह?
फिर तुम मंगल ग्रह गए या नहीं?
लम्बी कहानी है! फिर कभी फुर्सत में सुनाऊंगा!...
तुम बताओ! तुम मुझे क्यों ढूंढ रहे थे? कोई खास बात है क्या?
हां! मैं तुमको 'स्वर्ण नगरी' ले जाने के लिए आया हूं...
... क्या तुमको वहां जाने पर अपने आप ही मालूम हो जाएगा।
तो फिर मैं थोड़ी देर बाद आऊंगा। अभी मुझे इन आतंकवादियों से थोड़ी सी पूछताछ करनी है। तुम चलो!
ठीक है। वैसे भी अभी यहां पर भीड़ जमा होने ही वाली है। मैं चलता हूं!
स्वर्ण नगरी में तुम्हारा इन्तजार करूंगा।
धनंजय के जाने के ठीक बाद ही-
पूरा इलाका पुलिस से भर गया-
ये बर्फ की सिल्ली में कैसे बंद हो गए?
यह तो आप इनसे ही होश में आने पर पूछिएगा!
सर!

क्या है रामसिंह?
वायरलेस पर अभी-अभी मैसेज आया था सर! मेट्रो रेल प्लेटफॉर्म पर फैली गैस की रिपोर्ट आ गई है। यह वही गैस है, जिसके चार सिलेंडर, दो महीने पहले 'डिफेंस रिसर्च सेंटर' से चोरी हुए थे।
SUBWAY
आई सी! लेकिन इस वैन में तो एक ही सिलेंडर बरामद हुआ है। बाकी तीन सिलेंडर कहां गए?
यह तो इनके होश में आने ही मालूम होगा सर! फिलहाल आप इस कागज पर नजर डालिए। यह उधर बेहोश पड़े आतंकवादी की तलाशी में मिला है।
कोई नक्शा बना हुआ है इस पर!
यह क्या बना हुआ है? कुछ ऊटपटांग सा लगता है!...
जरा मुझे भी दिखाइए सर!
कागज पर नजर डालते ही ध्रुव चौंक उठा-
ओह! यह नक्शा तो राजनगर के समुद्री तट का लगता है। और समुद्र में जिस जगह पर 'X' का निशान बना हुआ है, वह जगह स्वर्ण नगरी से जुड़ी हुई है।
धनंजय भी मुझे किसी जरूरी काम से स्वर्ण नगरी ले जाना चाहता था। मुझे तुरन्त स्वर्ण नगरी पहुंचना होगा!
एक जरूरी काम याद आ गया एस. पी. साहब! मैं बाद में आकर आपसे मिलता हूं!
?

कुछ देर बाद - समुद्र की गहराइयों का सीना चीरता हुआ ध्रुव...
...एक अदृश्य आकर्षण से बंधे हुए रहस्यमय स्वर्ण नगरी में खड़ा था।
स्वागत है ध्रुव! तुमको मेरा बुलावा जल्दी ही मिल गया और तुम साथ ही आ गए।
यह सब छोड़ो, पहले मुझे बताओ कि मुझे यहां पर क्यों बुलाया है? स्वर्ण नगरी में सब ठीक-ठाक तो है न?
सब ठीक-ठाक है, ध्रुव! मैं तुमको दिखाता हूं कि हमको यहां पर तुम्हारी जरूरत क्यों पड़ी।
यह देखो! यह है तुमको यहां पर बुलाने का कारण।
महामानव
यह यहां पर कैसे आ गया? इसको तो जलमहल में सागरों ने कैद करके रखा था।

ज्वालाक वासियों के पास, महामानव को वहीं बनाए रख सकने के पर्याप्त साधन नहीं थे। एक बार तो महामानव वहां से आज़ाद होने में लगभग कामयाब हो ही गया था... तब ज्वालाक वासियों ने हमसे संपर्क किया और हम लोग महामानव को यहां ले आए
ओह, तो तुम लोग यहां पर महामानव को 'डिसइंटीग्रेट' करके रखते हो क्या?
नहीं, ध्रुव, महामानव जैसे अनियंत्रित मस्तिष्क वाले प्राणी को देर तक डिसइंटीग्रेट करके रख पाना संभव नहीं है। इसको सामान्य अवस्था में रखने का तरीका हमारे मानसिक विशेषज्ञ ने निकाला है
हां, ध्रुव, इसको बन्दी बनाए रखने के लिए इन्होंने यह यंत्र बनाया है। यह यंत्र किसी भी व्यक्ति के दिमाग पर ऐसा प्रभाव डालता है, जिससे उस व्यक्ति को ऐसा अनुभव होता है, मानो उसकी सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई है।
इस वक्त महामानव अपने सपनों में खोया हुआ यह देख रहा है कि उसने पूरी पृथ्वी से मानवों का विनाश कर दिया है, इसीलिए यह शान्त और निश्चिन्त हो गया है...
बधाई हो, आपने काम सफलता से पूरा कर लिया है
अभी नहीं ध्रुव, अभी तो मुझे महामानव की मानसिक ऊर्जा का इस्तेमाल करना है
...महामानव के अन्दर इतनी मानसिक ऊर्जा का भंडार है, जिसे अगर विद्युत ऊर्जा में बदल दिया जाए तो पूरी धरती को रोशन किया जा सकता है और इसके लिए मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है
मेरी मदद?

समझे ध्रुव?
इधर ध्रुव महामानव
और इसी वक्त-
इन अमरीकी सरकार
हमारे पास ऐसे-ऐसे
अत्याधुनिक शस्त्र हैं
कर सकते हैं।
हम कमाण्डर को अपने शस्त्रों पर बहुत भरोसा था-

लेकिन इसके पंख भी क्या कर सकते थे
विस्फोटक-

– और समुद्र पर– एक रहस्यमय आकृति समुद्र की खाक छान रही थी–

ज़्यादा पड़ेगा।

अरविंद की जहाजों के बेड़े ने भारतीय सरकार के आदेश से मिसाइल बेस के ऊपर की समुद्री सतह को घेर लिया-
और इसने समुद्र के ऊपर पहरा दे रहे जहाज को भी घेर लिया
अब हम ऊपर आ रहे हैं अरविंद।
अरे हाँ। लेकिन हुजूर ... अगर इन्होंने जरा सी भी हालत ... दो ही मिसाइलों को ...
मगर सभी जानते थे कि, आतंकवादियों के इरादे से अनजान नहीं थे-
हमारे पास सारे हथियार ... हैं। ... अड्डे को नष्ट कर सकते हैं
... आतंकवादियों का ...
... और फिलहाल वे आतंकवादी इतने सतर्क होंगे कि अड्डे में घुसकर इन पर काबू कर पाना असंभव है और अगर कहीं कोई चूक हो गई तो वे मिसाइलों को छोड़ भी सकते हैं
लेकिन ... नहीं ... सकते
आतंकवादियों पर काबू पाने का एक ... रास्ता है और वह है मिसाइल बेस में घुस ... पर काबू पाने ...
अगर किसी तरह ... उनका ध्यान सिर्फ ... सेकंड के लिए ... हटा सकता तो मैं इन पर काबू कर..

आह... आह
आह
तुम कौन ?

अब मेरी जाति के करोड़ों लोगों का हत्यारा अब मेरे हाथों से बच नहीं सकता
महासागर के तल तक पहुंच गई थी-
धनंजय और प्रमेय को इस नए अजनबी के आने का पता नहीं था-
कर दो
चिंता मत करो, धनंजय
जरूर
कुछ-कुछ
समझ में आ रहा है

अब मैं तुझे मारने में अपना समय खराब नहीं करूंगा..
...पहले मैं अपना ऑपरेशन पूरा करूंगा, न्यूक्लियर मिसाइलें लॉन्च करने का
और उसके बाद चाहे मैं तुझे मार डालूं या तू मुझे मार डाले, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता

आतंकवादियों की तरफ से कोई खबर आई?
पर बुलबुले फूट रहे हैं
कुछ ऊपर आ रहा है?

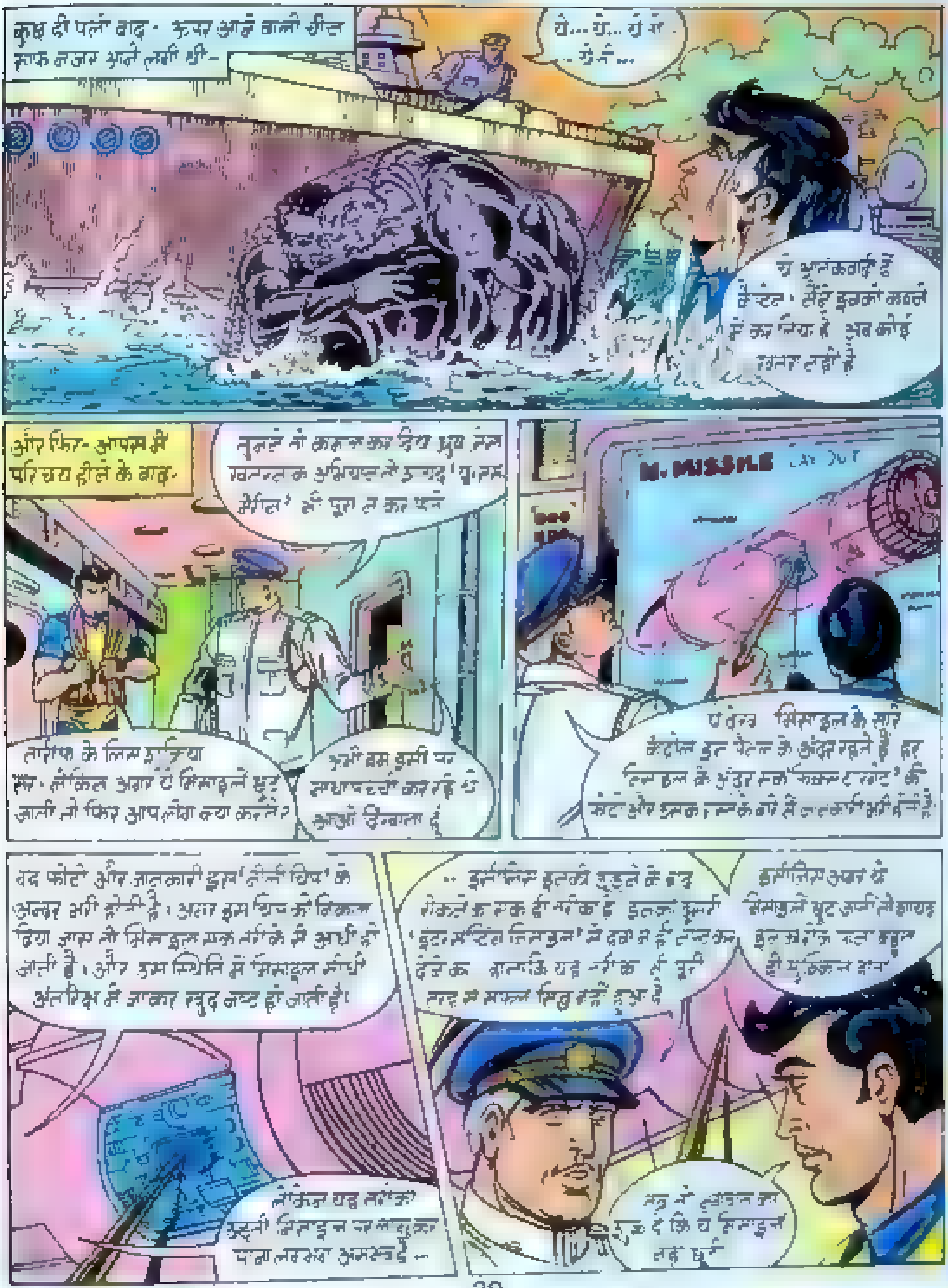
कुछ ही पलों बाद - ऊपर आने वाली चीज साफ नजर आने लगी थी-
ये आतंकवादी हैं कैप्टन, मैंने इनको काबू में कर लिया है, अब कोई खतरा नहीं है
और फिर- आपस में परिचय होने के बाद-
तारीफ के लिए शुक्रिया सर, लेकिन अगर ये मिसाइलें छूट जातीं तो फिर आप लोग क्या करते?
अभी हम इसी पर सावधानियाँ बरत रहे थे आओ दिखाता हूं
M. MISSILE
वह फोटो और जानकारी इस 'मैमोरी चिप' के अन्दर भी होती है। अगर इस चिप को निकाल दिया जाए तो मिसाइल एक तरीके से अंधी हो जाती है। और इस स्थिति में मिसाइल सीधी अंतरिक्ष में जाकर खुद नष्ट हो जाती है।

U.S.NAVY
और हमारे मिसाइलों की सही स्थिति का पता करो। बाकी सब मैं संभाल लूंगा, जल्दी करो

मिसाइल अपना रास्ता बदलकर अंतरिक्ष की तरफ मुड़ गई-
ध्रुव के 'क्लू चिप' निकालते ही -
और एक भयानक धमाके के साथ नष्ट हो गई-
यह देखकर महामानव के मस्तिष्क को नियंत्रित कर रही वह रहस्यमय आकृति विचलित हो गई-

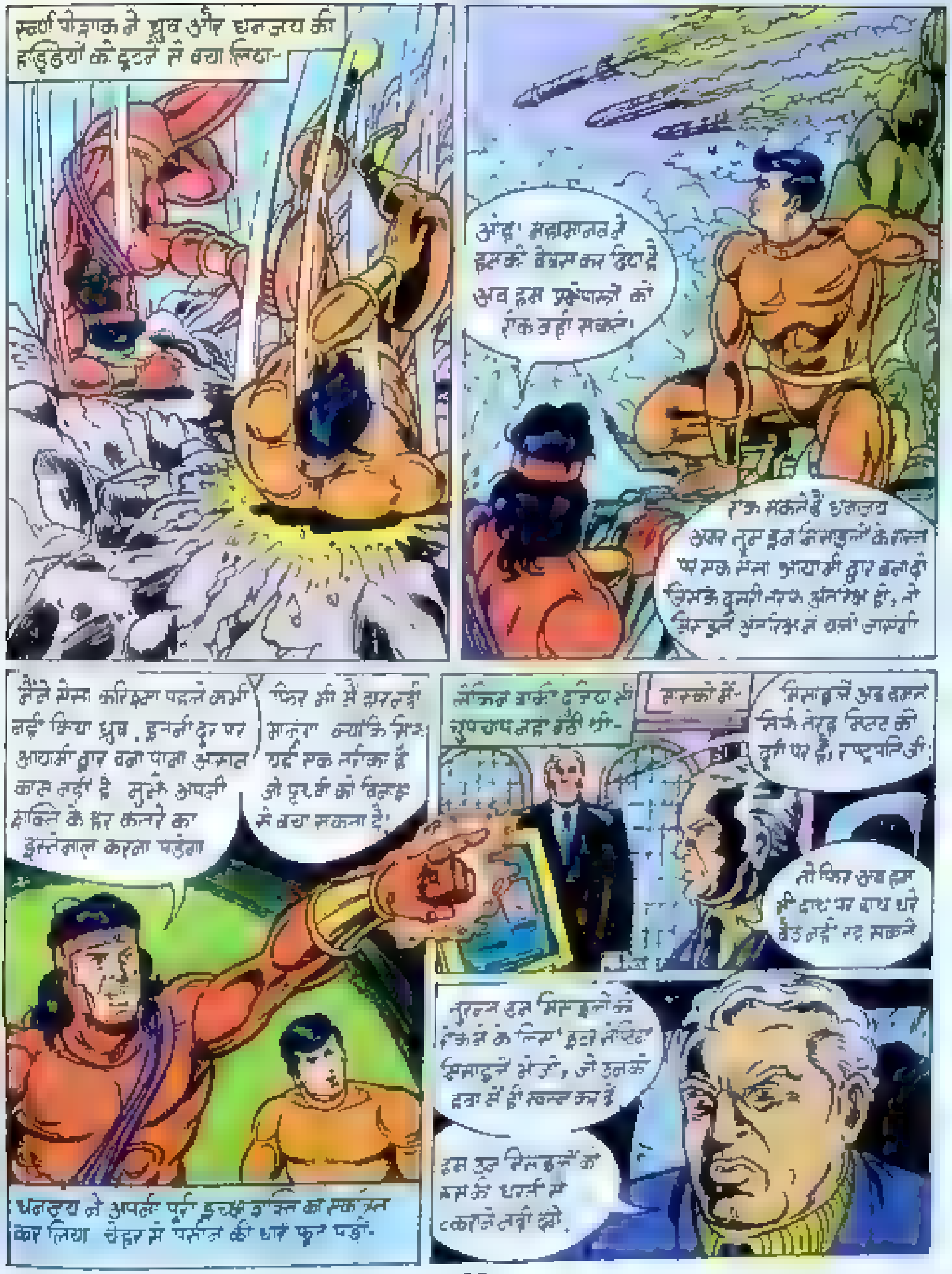
स्वर्ण पोशाक ने ध्रुव और धनञ्जय की हड्डियों को टूटने से बचा लिया-
ओह! महामानव ने हमको बेबस कर दिया है अब हम प्रक्षेपास्त्रों को रोक नहीं सकते।
रोक सकते हैं धनञ्जय अगर तुम इन मिसाइलों के मार्ग पर एक ऐसा आयामी द्वार बना दो जिसके दूसरी तरफ अंतरिक्ष हो, तो मिसाइलें अंतरिक्ष में चली जाएंगी
मैंने ऐसा करिश्मा पहले कभी नहीं किया ध्रुव. इतनी दूर पर आयामी द्वार बना पाना आसान काम नहीं है मुझे अपनी शक्ति के हर कतरे का इस्तेमाल करना पड़ेगा
फिर भी मैं हार नहीं मानूंगा क्योंकि सिर्फ यही एक तरीका है जो पृथ्वी को विनाश से बचा सकता है।
धनञ्जय ने अपनी पूर्ण इच्छा शक्ति को एकत्र कर लिया। चेहरे से पसीने की धारें फूट पड़ीं-
लेकिन बाकी दुनिया भी चुपचाप नहीं बैठी थी-
मास्को में-
मिसाइलें अब बस मिनटों भर की दूरी पर हैं, राष्ट्रपति जी।
तो फिर अब हम भी हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रह सकते
तुरन्त इन मिसाइलों को रोकने के लिए हमारी मिसाइलें भेजो, जो इनको हवा में ही खत्म कर दें
हम इन मिसाइलों को रूस की धरती से टकराने नहीं देंगे.

उधर धनंजय, त्रिशूलों के रास्ते पर आयामी द्वार बनाने में जी जान लड़ा रहा था-
जल्दी करो धनंजय! ये त्रिशूल तो और दूर होते जा रहे हैं, जल्दी!
मैं आयामी द्वार को और बड़ा बनाने की कोशिश कर रहा हूं, ताकि इसमें से तीनों ही प्रक्षेपास्त्र एक साथ गुजर जायें
लेकिन समय रहते द्वार इतना बड़ा नहीं बन सका-
दो त्रिशूल तो आयामी द्वार को पार करते हुए अंतरिक्ष में जा पहुंचे-
पर एक त्रिशूल आयामी द्वार को नजर अंदाज करते हुए उसके बगल से गुजर गया-
हे देव! एक प्रक्षेपास्त्र अभी बच ही गया है...
...और अब वह इतनी दूर पहुंच चुका है जहां पर मैं आयामी द्वार नहीं बना सकता।
अब तुम अपने लिए एक आयामी द्वार बना लो, स्वर्णप्रभा ताकि तुम और ये लड़का भाग सकें, वर्ना पहले तो तुम्हारी चिता जलेगी, और बाद में तुम मरोगे
उधर देखो

उसके पुकारने पर ध्रुव और धनंजय के शरीर थरथरा उठे -
कुछ ही दूरी पर एक 'इंटरसेप्टिंग मिसाइल' आणविक मिसाइल को नष्ट करने के लिए आगे बढ़ रही थी -
ओह! अगर ये दोनों मिसाइलें आपस में टकरा गईं तो यह जगह नर्क का प्रतिरूप बन जाएगी। कुछ करो धनंजय
मैं आपकी पुकार बनने में अपनी बहुत ऊर्जा खर्च कर चुका हूँ ध्रुव, अब इन प्रोजेक्टाइल्स को रोकना तो दूर, मैं बच निकलने के लिए आपकी दूर तक नहीं जा पा रहा हूँ ...
.. ज्यादा अच्छा होगा कि ये मिसाइलें तुम दोनों के शरीरों से टकराकर फटें
?
बहुत अच्छा तब तो मैं इन मिसाइलों को इन में टकराकर देखना नहीं छोड़ूँगा ...
हा हा हा! अब ये मिसाइलें फटकर पृथ्वी का नाश कर जाएँगी

हिमालय पर
पौराणिक ऊर्जा ...

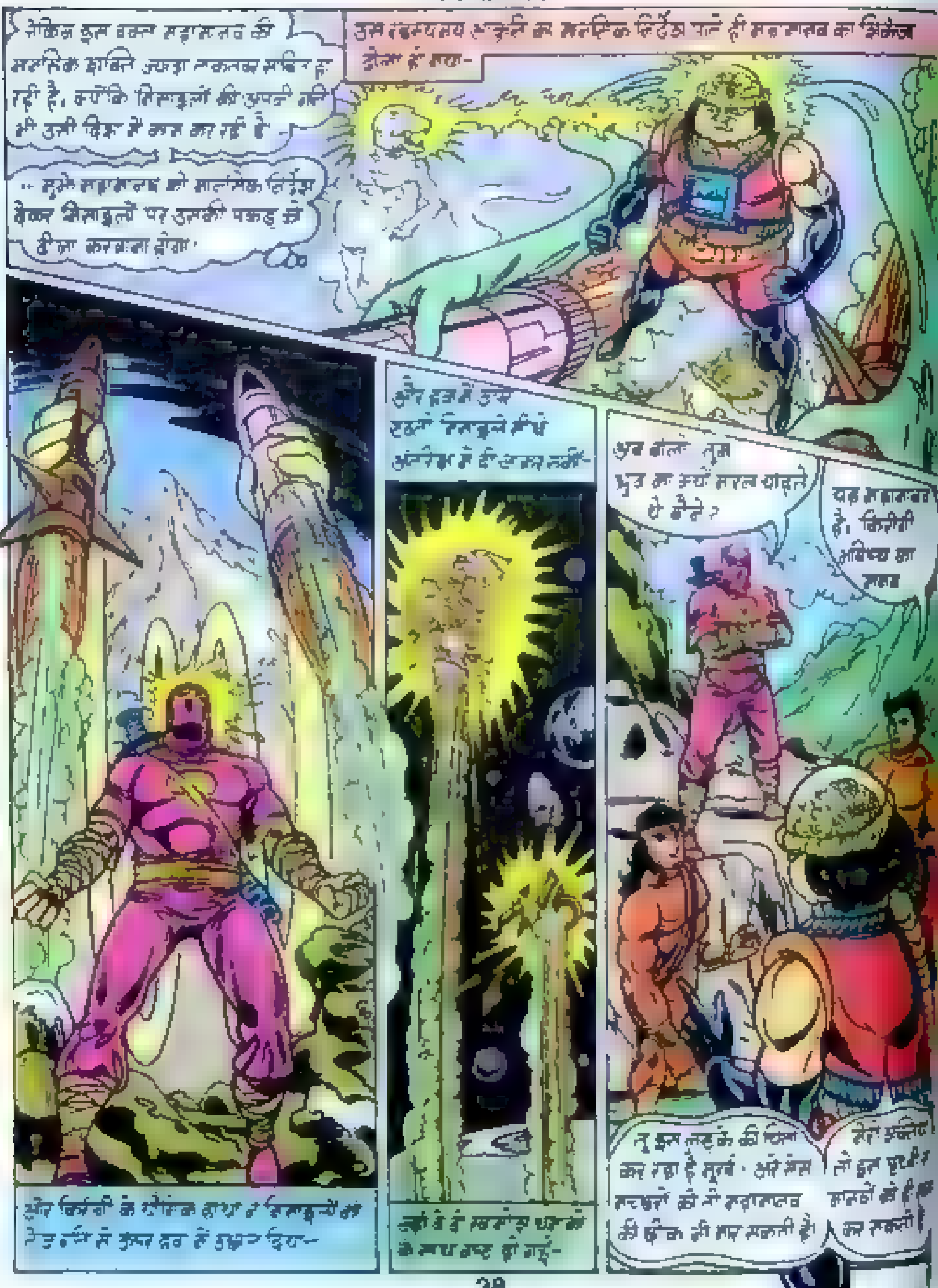
लेकिन इस वक्त महामानव की मानसिक शक्ति उसका साथ नहीं दे रही है, क्योंकि त्रिशूलों की ऊर्जा भी उसी दिशा में काम कर रही है-
...मुझे महामानव को मानसिक निर्देश देकर त्रिशूलों पर उसकी पकड़ को ढीला करवाना होगा।
उस रहस्यमय आकृति का मानसिक निर्देश पाते ही महामानव का शिकंजा ढीला हो गया-
अब बोलो, तुम
यह महामानव है,
तू इस लड़के की चिन्ता कर रहा है मूर्ख।

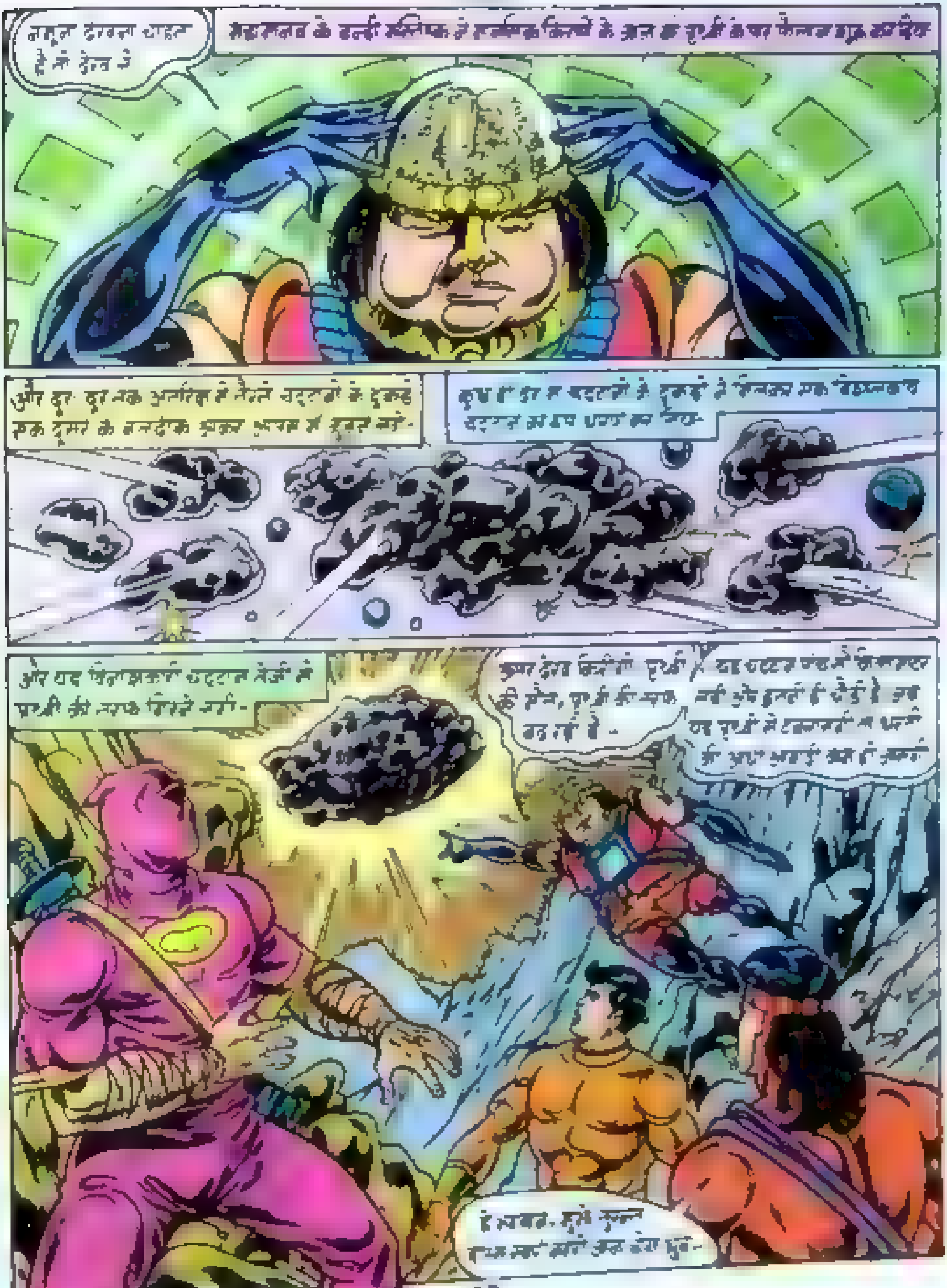
और यह विनाशकारी चट्टान तेज़ी से पृथ्वी की तरफ गिरने लगी -

और फिर वह
ओह! यह सिर्फ बेहोश हुआ है
में बचा लिया
लेकिन अब इस उल्का को सिर्फ
यौगिक शक्ति मानसिक
इसलिए विजय मेरी
यौगिक शक्ति की ही होगी

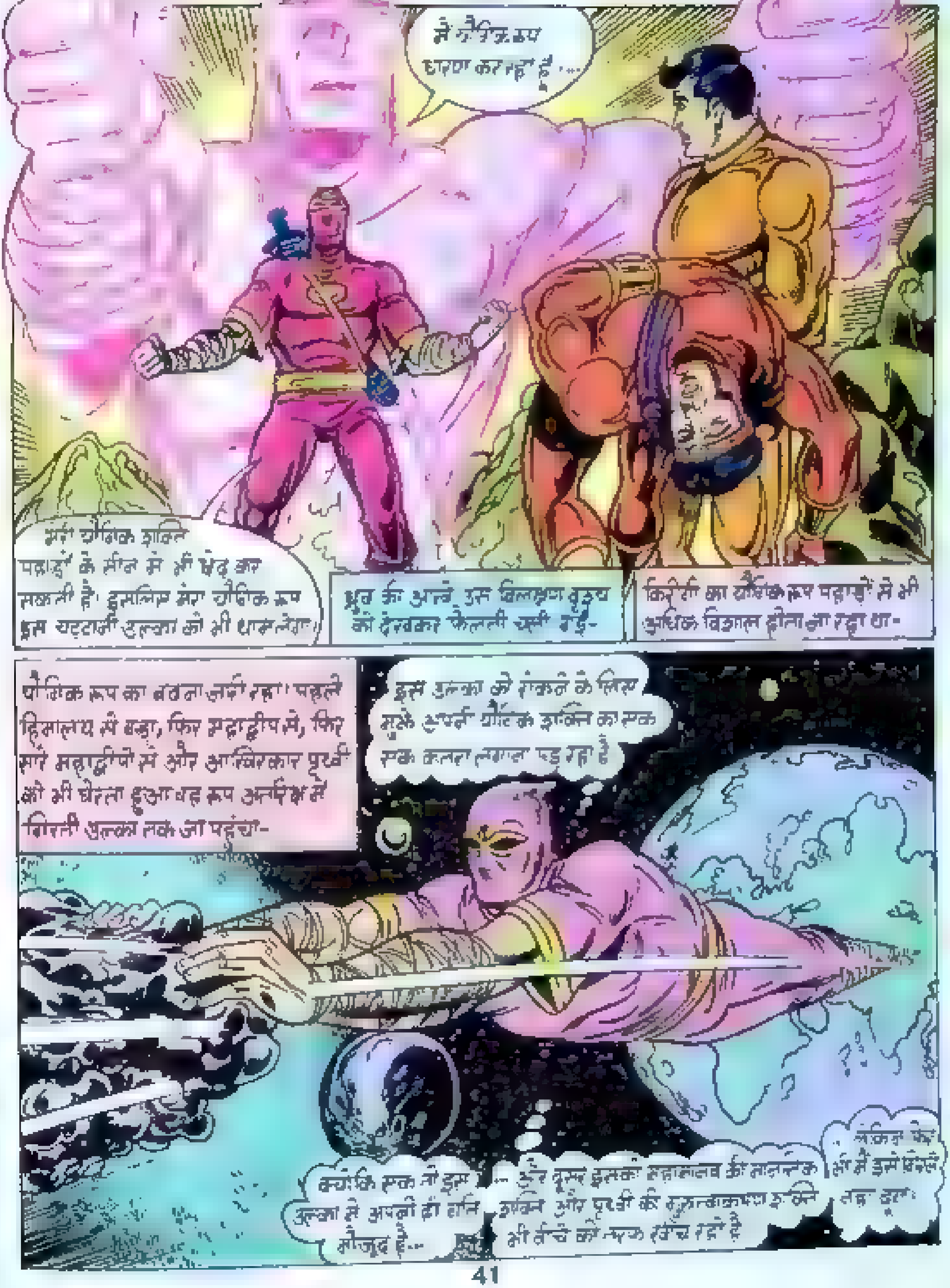
मैं यौगिक रूप धारण कर रहा हूँ...
मेरी यौगिक शक्ति पहाड़ों के सीने में भी छेद कर सकती है। इसलिए मेरा यौगिक रूप इस चट्टानी उल्का को भी थाम लेगा।
ध्रुव की आँखें उस विलक्षण दृश्य को देखकर फैलती चली गईं-
किरीटी का यौगिक रूप पहाड़ों से भी अधिक विशाल होता जा रहा था-
यौगिक रूप का बढ़ना जारी रहा। पहले हिमालय से बड़ा, फिर महाद्वीप से, फिर सारे महाद्वीपों से और आखिरकार पृथ्वी को भी घेरता हुआ वह रूप अन्तरिक्ष में गिरती उल्का तक जा पहुंचा-
इस उल्का को रोकने के लिए मुझे अपनी यौगिक शक्ति का एक-एक कतरा लगाना पड़ रहा है
क्योंकि एक तो इस उल्का में अपनी ही गति मौजूद है...
...और दूसरे इसको महाकाल की तान्त्रिक शक्ति और पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी नीचे की तरफ खींच रही है
लेकिन फिर भी मैं इसे रोककर रहूंगा।

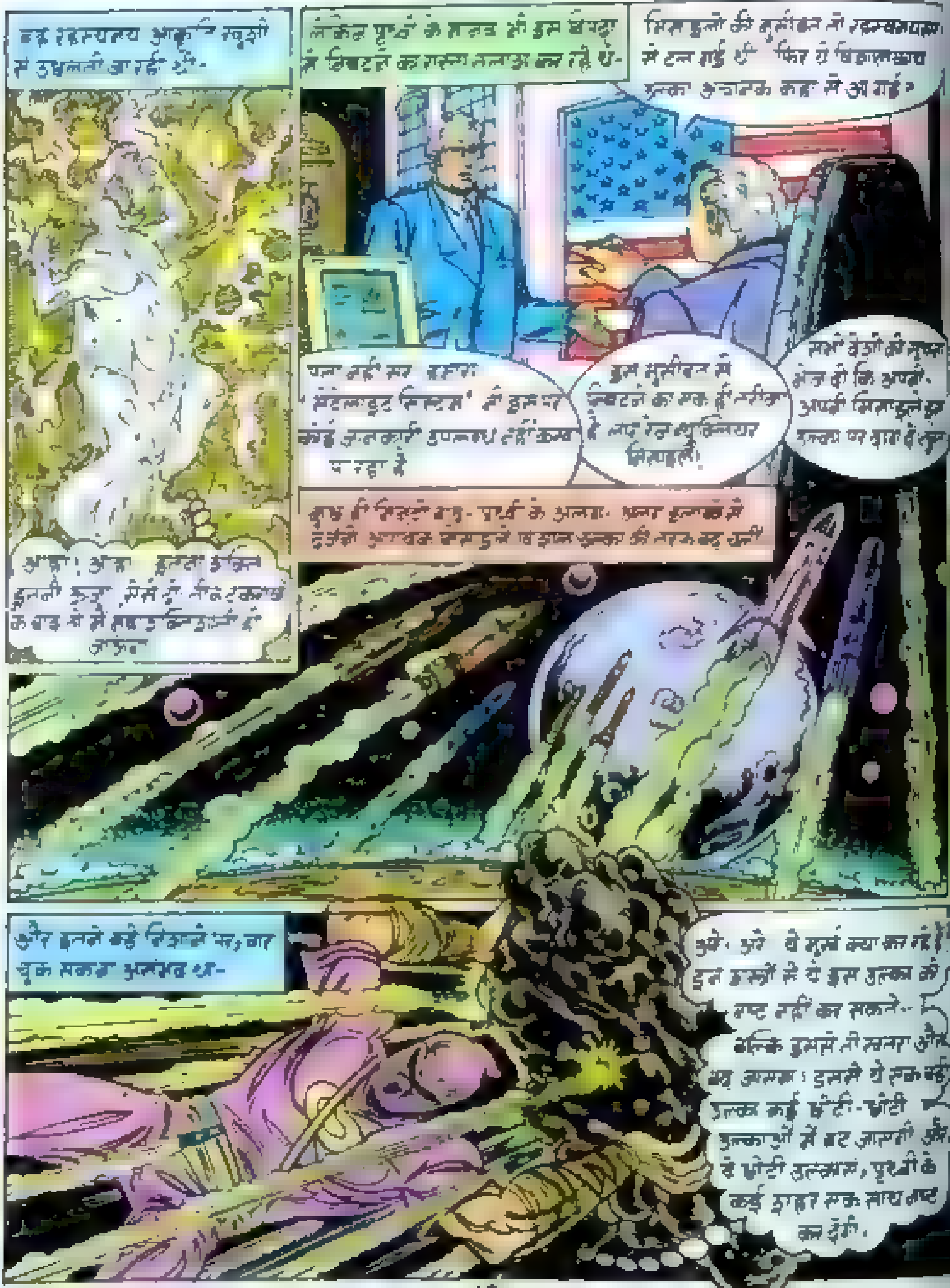
वह रहस्यमय आकृति खुशी से उछलती आ रही थी-
लेकिन पृथ्वी के शासक भी इस संकट से निबटने का रास्ता तलाश कर रहे थे-
फिर ये विशालकाय उल्का अचानक कहां से आ गई?
अरे, अरे ये मूर्ख क्या कर रहे हैं! इन हथियारों से ये इस उल्का को नष्ट नहीं कर सकते... बल्कि इससे तो ख़तरा और बढ़ जाएगा। इससे ये एक बड़ी उल्का कई छोटी-छोटी उल्काओं में बंट जाएगी और वे छोटी उल्काएं, पृथ्वी के कई शहर एक साथ नष्ट कर देंगी।

ओह, यही दुर्भाग्य जिसका मुझे डर था
अब मैं इतने सारे टुकड़ों को एक साथ पृथ्वी पर गिरने से रोक नहीं सकता।
पूरी दुनिया में तुरन्त ही हाहाकार मचने लगा उल्का के बड़े बड़े कई टुकड़े पृथ्वी के अलग-अलग कई इलाकों की तरफ गिर रहे थे-
और हिमालय पर-
अब क्या होगा किरीगी?
तुमने ठीक याद दिलाया
नहीं एक तरीका है तुम्हारा सबक! यह किसी भी चीज को काट सकता है

...कुछ ही मिनटों में अन्तरिक्ष में पृथ्वी की तरफ गिरते उल्काओं तक पहुंच गया
और उनको बिजली से भी तेज गति से ऐसे काटने लगा, जैसे गर्म माल को तेज छुरी काटती है-
पृथ्वी पर भारी खतरा टल रहा था-
लेकिन ध्रुव और किरीट के लिए खतरा बढ़ रहा था
किरीट! एक उल्का ठीक इसी जगह पर गिरने आ रही है
इस वक्त मैं अपनी यौगिक शक्ति का इस्तेमाल इस उल्का को रोकने के लिए नहीं कर सकता।
तो फिर हम सब मारे जाएंगे किरीट! एक साथ!

और फिर वह स्वयं भी वहां से विलुप्त हो गया-
हा हा हा! किरीगी! अब तू मेरे पीछे-पीछे ऐसे भागेगा जैसे मालिक के पीछे कुत्ता। आ और आकर मुझे हरा ले हा हा हा!
अब तक धनञ्जय के हाथ भी वापस आ रहे थे-
यह सब क्या हो रहा है किरीगी?
महामानव और ध्रुव दोनों ही गायब हो गए पर कहां?
महामानव, ध्रुव को किसी अज्ञात स्थान पर ले गया है और मुझे वहां पर आकर उसे बचाने की चुनौती भी दे गया है पर चिन्ता की कोई बात नहीं है।
मेरा स्वर्ण मुझे अपने-आप उसी स्थान पर ले जाएगा जहां महामानव और ध्रुव हैं।
मैं भी स्वर्ण नगरी जाकर अपने यन्त्रों द्वारा उस स्थान का पता लगाने की कोशिश करता हूं।
किरीगी की यौगिक शक्ति उसे उसी स्थान की तरफ खींचकर ले जाने लगी जहां पर उसका मित्र भी था और शत्रु भी-
और यह दृश्य देखकर किसी की बांछें खिल गईं-
और मुझे भी उस स्थान पर पहुंच जाना चाहिए, जहां पर मैंने इन दोनों महाशक्तियों के टकराव की व्यवस्था कर रखी है।

किरिरी को ध्रुव और महासागर तक पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा और वहां पर जो स्थिति उसका इंतजार कर रही थी, वह सचमुच बहुत भयानक थी-
आहा : आओ, किरिरी आओ, मुझे पूरा यकीन था कि तुम मुझे आखिरकार ढूंढ निकालोगे।
जब तक तुम्हारे जैसा देखने वाला न हो, तब तक ऐसा तमाशा दिखाने का मजा ही क्या है
मैं इस वक्त जिस जगह पर खड़ा हुआ हूं, वह समुद्र के बीच का एक छोटा सा द्वीप नहीं है, बल्कि समुद्र के अन्दर के एक पहाड़ का शिखर है.
...पहाड़, जो एक सुप्त ज्वालामुखी होने के साथ साथ, इस पृथ्वी का सबसे महत्त्वपूर्ण पहाड़ है ...

...क्योंकि इसी पहाड़ में निकले हैं इस पृथ्वी के सारे पहाड़। पृथ्वी के सभी पहाड़ समुद्र के अंदर से इन सुप्त ज्वालामुखियों से जुड़े हुए हैं। अब मैं अपनी मानसिक ड्रिल से इस पहाड़ में एक छेद करूंगा, जो लावे से भरे इस पृथ्वी के केन्द्र तक जाएगा...
'मानसिक ड्रिल' के कम्पनों से इन सारे पहाड़ों में एक भीषण कंपन पैदा होगा, जिससे पृथ्वी में जगह-जगह पर मीलों लम्बी दरारें बन जाएंगी। समुद्र का पानी इन दरारों से होकर पृथ्वी के गर्भ लावे तक पहुंचेगा फिर भाप बनेगी और इस भाप का भीषण दबाव पृथ्वी को कागज के लिफाफे की तरह फाड़ देगा
यह सब कुछ होने में सिर्फ मिनटों का समय लगेगा और इन मिनटों के दौरान इस लड़के पर लिपटा हुआ मेरा 'मानसिक खोल' कसना आरम्भ होगा...
इतना कसेगा कि इसकी सारी हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएंगी। यह चीखेगा और इसकी चीख तू 'मानसिक खोल' के अंदर से भी सुन सकेगा।
अब मेरा पृथ्वी को नष्ट करने का आपरेशन शुरू होता है
अब मर्जी तेरी है या तो इस लड़के को बचा ले, या फिर पृथ्वी को!
'मानसिक ड्रिल' ने पहाड़ के अंदर छेद करना शुरू कर दिया और मानसिक खोल ने ध्रुव को कसना-
लेकिन कोई भी अब तक समझ ही नहीं पा रहा था कि वह ड्रिल की तरफ बढ़े या ध्रुव की तरफ-

फिलहाल महामानव एक गलती कर गया है इस वक्त वह पानी पर खड़ा है शायद मेरे मित्र इस वक्त मेरी कुछ मदद कर सकें
ध्रुव के गोल होंठों से एक खास सीटी उभरी...
...और लगभग तुरन्त ही सीटी के जवाब में एक डॉल्फिन पानी की सतह पर उभर आई ध्रुव के होंठों से सीटी का निकलना जारी रहा–
डॉल्फिन ध्रुव की बात को समझते ही..
...पानी में वापस गोता लगा गई–
उम्मीद है कि डॉल्फिन मेरी बात समझ गई होगी.
अब, जब ये वापस आएगी तो अपने साथ लेकर आएगी एक फुल साइज़ वाली 'ईल मछली'..
जो अपने शरीर में इतनी बिजली बना सकती है जो एक ही झटके में घोड़े तक को बेहोश कर दे
और अब यह असावधान महामानव को करेंट मारेगी तो इसका दिमाग कुछ देर के लिए तो बेहोशी की दुनिया में चला ही जाएगा!

ठीक कह रहे हो, फिलहाल सामने आई समस्या से तो निपटा जाए। महामानव से तो बाद में भी निपटा जा सकता है
इस दुष्ट यंत्र से इस व्यक्ति को ढूंढने की कोशिश करते हैं जो शायद आसपास ही छिपा हुआ होगा
और मैं महामानव के शरीर से यह यंत्र उतारता हूं
प्रोफेसर ने यंत्र से तरंगों को खोजना शुरू कर दिया -
और ध्रुव ने एक खतरे को काटने के लिए दूसरा खतरा मोल ले लिया -
महामानव के शरीर से यंत्र उतारते ही
महामानव के होश वापस उसके काबू में आ गए -
और यंत्र से बंद कर रखी मानसिक किरणें गायब हो गईं
हम, तुम यहां पर क्या कर रहे हो? और... और मैं यहां पर कैसे आ गया? मैं तो जलालोक में था फिर... फिर शायद मुझे यहां लाया गया था... फिर मैं यहां कैसे..
ध्रुव, ये देखो, हमारी तरंगों ने एक मानसिक आकृति को ढूंढ निकाला है
शायद ये ही इस सारी गड़बड़ का कारण है
कुछ पलों के लिए धीरज रखो महामानव, फिलहाल मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं।
तुम्हारा दुश्मन--
शायद नहीं! मैं ही इस सारे षड्यंत्र का सूत्रधार हूं
और तुम मेरी मानसिक आकृति को देख कर क्या करोगे?
मैं तुमको अपना असली शरीर ही दिखा देता हूं--

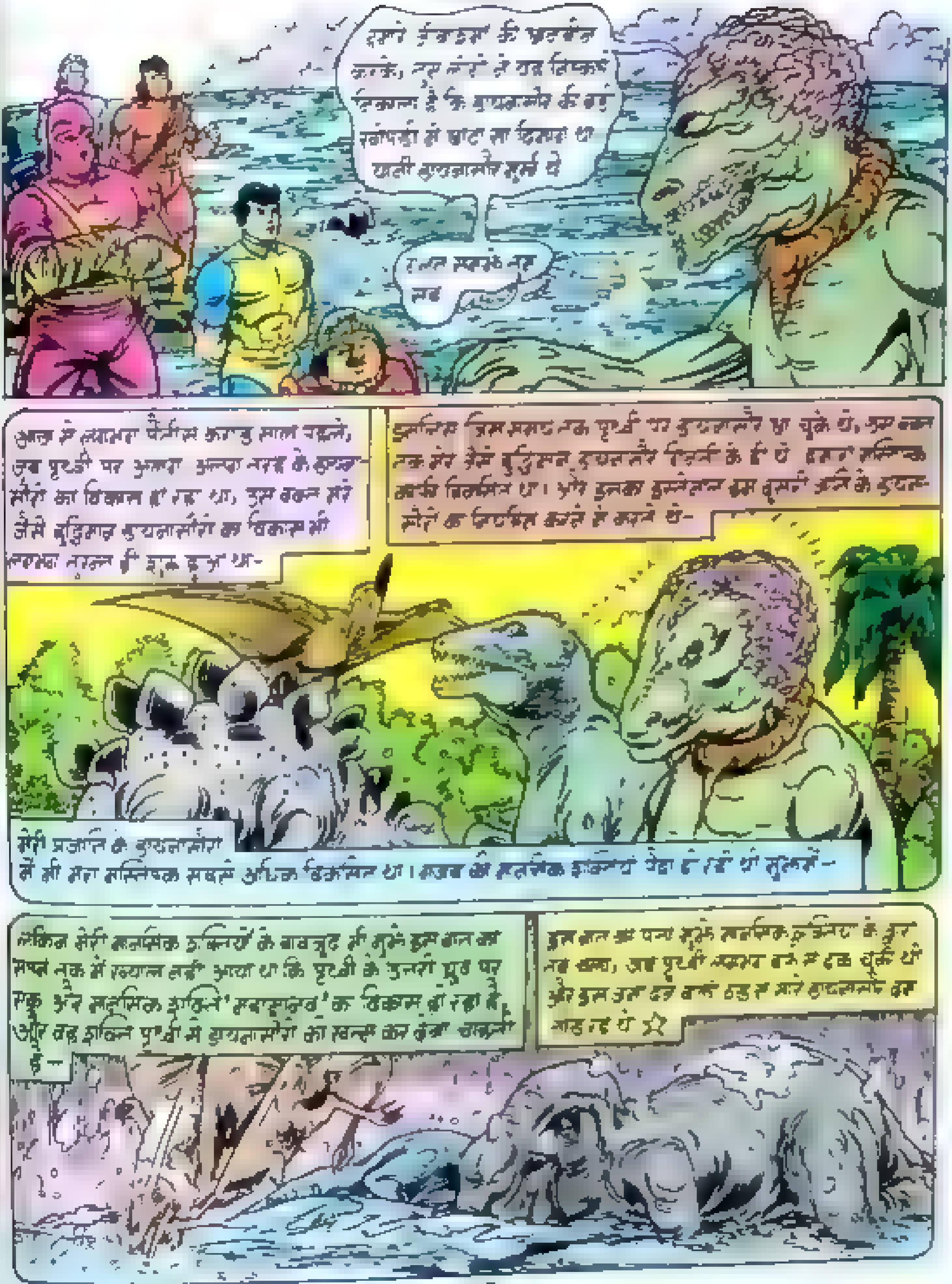
आज से लगभग पैंतीस करोड़ साल पहले, जब पृथ्वी पर अलग-अलग तरह के डायनासोरों का विकास हो रहा था, उस वक्त मेरे जैसे बुद्धिमान डायनासोरों का विकास भी लगभग साथ ही शुरू हुआ था-
मेरी प्रजाति के डायनासोरों में भी मेरा मस्तिष्क सबसे अधिक विकसित था।
लेकिन मेरी मानसिक शक्तियों के बावजूद भी मुझे इस बात का सपने तक में ख्याल नहीं आया था कि पृथ्वी के दूसरे छोर पर एक और मानसिक शक्ति 'महामानव' का विकास हो रहा है, और वह शक्ति पृथ्वी से डायनासोरों को खत्म कर देना चाहती है-

★ पढ़ें 'महामानव'

मौत की चालें यहां पर
लगाने वाला सिर्फ तू है महाकाल-
नीचा! मानव एक प्रकार से
मेरे पूर्वज हैं! अगर कोई दूसरी
प्रजाति का प्राणी मानवों की जान
का दुश्मन बनेगा तो महामानव
उसका दुश्मन बन जाएगा!
मानवों को मौत और जिन्दगी
देने का अधिकार सिर्फ
महामानव के पास है!
तू भूल रहा है महामानव कि मानसिक शक्तियां मेरे पास भी हैं...
...और मानसिक वार करना मुझे भी आता है।
लेकिन अभी दूसरी महाशक्तियां अपने होश में थीं-
मेरा खड्ग तेरी गर्दन को काटकर तुझे एक बार फिर एक बहुत लंबी नींद सुला देगा, सरीसृप!
तू भी महामानव की तरह यह भूल रहा है किरीगी, कि तेरे मेरी यौगिक ऊर्जा भी सोखती है...
महामानव के मानसिक वार किए तो बहुत थे लेकिन खाया एक भी नहीं था। एक ही वार ने महामानव की आधी ताकत को चूस लिया-
अब तू भी अपनी यौगिक शक्ति का स्वाद खुद ही चख ले!

असावधान किरीगी जब तक अपने बचाव का रास्ता सोच पाता, उसी की यौगिक शक्ति से भरा खड्ग, उसके शरीर से आ टकराया-
खड्ग, वज्र जैसे कड़े किरीगी के शरीर को काट तो नहीं सका, लेकिन ऊर्जा का झटका ही किरीगी को कुछ देर के लिए बेहोश कर देने को काफी था-
महामानव और किरीगी से निपटने के बाद गलागलगीगा बाकी तीनों की तरफ मुड़ा-
तुम तीनों कीड़ों से मुझे कोई खतरा नहीं लग रहा है। वैसे भी इतनी शताब्दी सोया रहने के बाद मेरी भूख भड़क उठी है।...
...और मैं तय नहीं कर पा रहा हूं कि तुम तीनों में से पहले किसे खाऊं? तुम्हीं बताओ, अपने राजा का पहला भोजन बनने का सौभाग्य कौन प्राप्त करना चाहता है?
ये दोनों भी काफी शक्तिशाली मानव हैं, गलागला गीगा। बाद में तुम्हारे काम आएंगे। मैं तुम्हारे किसी काम का नहीं हूं। तुम मुझे ही खा लो।
क्या कह रहे हो ध्रुव? तुम पीछे हो जाओ। हम इससे किसी न किसी तरह से निपट ही लेंगे!

तुम बीच में मत पड़ो प्रमेन! मैं जानता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं। शायद यही हम सबके लिए अच्छा होगा!
प्रमेन समझ नहीं रहा है कि मुझे जान गंवाने का शौक नहीं है। मेरे पास हलालाहीचा को मात देने के लिए एक योजना है।
लेकिन इसके लिए मुझे अपने दिमाग को शून्य रखना पड़ेगा। क्योंकि हलालाहीचा मेरे मस्तिष्क को भी पढ़ सकता है।...
यह मानव ठीक कह रहा है। तुम दोनों स्वर्ग मानव ही वह यंत्र लेकर आए थे जिसने मेरे मानस रूप को ढूंढ निकाला था, पर यह मानव भी कम खतरनाक नहीं है।...
...यह ख्याल हमेशा ही आता था कि महामानव के पीछे किसी और का हाथ है। इसको खाकर पचा जाना ही सबसे अच्छा होगा!
हलालाहीचा ने ध्रुव को खा जाने के लिए, उसको पंजे में पकड़कर अपने शरीर के पास खींचा-
और उसी पल ध्रुव ने बिजली की सी फुर्ती से वह यंत्र, हलालाहीचा की छाती पर चिपका दिया। जो उसने महामानव के शरीर पर से उतारा था-
लगभग तुरन्त ही हलालाहीचा का मस्तिष्क भी शिथिल और शान्त हो गया। यंत्र ने उसको, उसके ही ख्यालों की उस दुनिया में पहुंचा दिया था जहां पर उसकी सारी इच्छाएं पूरी हो चुकी थीं-
मुझे सचमुच बहुत अफसोस है हलालाहीचा कि मैंने तुमको अपना शरीर खाने दे देकर तुमको धोखा ही दे दिया...
...लेकिन यह यंत्र चिपकाने के लिए मुझे तुम्हारे पास पहुंचना जरूरी था, और तुम्हारे पास पहुंचने का सिर्फ यही एक रास्ता मुझे समझ में आया था।

और फिर-
कमाल कर दिया तुमने ध्रुव! पंख तो हमारे पास सारे समय था, लेकिन उसको इस्तेमाल करने का ख्याल सिर्फ तुमको ही आया!
सिर्फ पंख का ही नहीं, बल्कि इस पूरे प्रकरण में शक्तियां तो हमारी जरूर थीं, लेकिन उनका सही इस्तेमाल ध्रुव ने ही सुझाया!
मैं तुम्हारी बुद्धि का चमत्कार तीसरी बार देख रहा हूं ध्रुव! और तीनों बार जो काम मेरी मानसिक शक्तियां भी न कर सकीं, वह तुमने कर दिखाया।
शायद मानसिक शक्तियों का बुद्धि से कोई संबंध नहीं है...
...और अगर ऐसा है तो मानव, महामानव से किसी तरह से कम नहीं है। अब मानवों के बारे में मेरी राय बदल चुकी है। मैं खुद नहीं जानता कि अब मैं क्या चाहता हूं। और यही सोचने के लिए मुझे वक्त चाहिए...
...इसलिए फिलहाल मैं यहां से जा रहा हूं...
महामानव तो गायब हो गया धनंजय।
लेकिन लगता है कि फिलहाल वह मानवों और पृथ्वी के लिए खतरा नहीं रहा।
पृथ्वी पर आया संकट टल गया है। अब मैं भी हिमालय वापस जा रहा हूं।
ध्रुव को वापस राजनगर पहुंचाने के बाद हमको इस सरीसृप का भी इन्तजाम करना है धनंजय! इसीलिए अब हमको भी जाना होगा!

समाप्त।